रविवार दिनाँक 25-08-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

साजन, साजन, साजन जी भई सुरति तुम्हारी

तुम ही शब्द हो तुम ही परिभाषा

बल बुद्धि और मेरा विश्वासा

साजन, साजन, साजन जी सूरजां दे सूरज तों वारी

साजन, साजन, साजन जी भई सुरति तुम्हारी

आपका यह कथन सत्य हो, इस हेतु अपने ऊपर आत्म-नियन्त्रण रखते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित सार्थक शब्द धारण करने का प्रयास करना होगा। तभी मुख से सार्थक कथन निकालना सम्भव हो पाएगा। यहाँ याद रखो कि जहाँ हृदय में सार्थक ज्ञान होता है और वाणी से सार्थक शब्दों का उच्चारण होता है, वहाँ परस्पर रिश्तों में सजनता व एकता का भाव पनपता है। इस संदर्भ में जिस प्रकार स्त्री पति संग सुन्दर/अच्छी लगती है, वैसे ही सुरत, शब्द हृदय में विराजमान/शोभित पति परमेश्वर यानि साजन संग सुन्दर लगती है और सौभाग्यशाली नाम कहाती है। इस यथार्थ को स्वीकार कर इसी अनुरूप अपनी सुरत का सम्बन्ध शब्द संग स्थापित करो और उसी में अपने मन को लीन रखते हुए आत्मेश्वर का साक्षात्कार करने में सफल हो जाओ। जानो यथार्थ में यही आत्म-साक्षात्कार होता है यानि मैं वास्तव में क्या हूँ, इस सत्य से परिचित होने की बात है। सजनों जब अपनी वास्तविकता समझ आ गई तो फिर कोई भी ताप आपको सता नहीं सकेगा। इस तरह आपका जीवन तीनों तापों से मुक्त हो सुखद, आनन्दमय व सुन्दर बन जायेगा।

सजनों हम मानते हैं कि ऐसे जीवन की प्रबल इच्छा तो सभी सजनों के अन्दर होनी ही चाहिये क्योंकि यही सर्वोत्तमता, निःस्वार्थता व निर्विकारिता से जीवन जीने और परमधाम पहुँच विश्राम पाने की मंगलकारी बात है। अतः जो भी मन-वचन-कर्म में उतारो, वह केवल सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित सत्यज्ञान अनुरूप ही हो व उसी विध् ही जीवन निर्वहन करो तभी निर्भय व जगत से आज़ाद होकर निर्लेप जीवन यापन करने में सक्षम हो पाओगे। यहाँ निर्लिप्तता से आशय है - सब फुरनों से आज़ाद। सजनों क्या जानते हो कि इन्सान

कब फुरनों से आज़ाद हो पाता है? - जब सत्यज्ञान से उसकी बौद्धिक शक्ति भरपूर होती है। इस विषय में यदि हम अपने सजन हैं तो इस वास्तविकता को अपनाना आवश्यक मानो। अब आगे ध्यान से भजन सुनोः-

महाबीर जी नाल प्रीत लगा सुरति, हुन अपना आप बना सुरति।

तू अपना आप भुलाया ए, हुन रघुनाथ जी नाल प्रीत लगा सुरति।

बखेड़ियाँ विच चित्त न लाईं, तू अपना रूप संभाल सुरति।

क्यों निम दा बूटा लाया ई, हुन अंब दा बूटा लगा सुरति।

कौड़याई नू दिलों हटा ही दे, अमृत दा प्याला बना सुरति।

हुन विष नूं दिलों हटा ही दे, अमृत दा प्याला बना सुरति।

अमृत दा प्याला पी सुरति जन्म मरण तू अपना बना सुरति।

हुन वैर विरोध हटा सुरति, प्रीति हरि चरणां विच ला सुरति।

सत्य शास्त्र दा तू विचार करीं, बली नाम दी ध्वनि लगा सुरति।

संसार दे वल हुन न जावीं, बली रस्ता दिता ए दिखा सुरति।

महाबीर जी दे चरणां विच प्रीत लांवी, सियाराम नू देसन मिला सुरति।

हुन बाहर दे मन्दिर हटा सुरति, तू अन्दर मन्दिर बना सुरति।

रघुनाथ जी दे चरणां दे विच राहवीं, तू सुखां दी उमर बिता सुरति।

बली दा रघुनाथ जी दे नाल प्यार सुरति, देनगे चरणां विच बहला सुरति।

उन्हां नू पीले वस्त्र पहना सुरति, उन्हां नू मस्तक तिलक लगा सुरति।

सांवले चरणां विच तू मस्त रहीं, उन्हां दी लीला अपरम्पार सुरति।

अचरज उन्हां दी लीला ए, जिदा अन्त न पारावार सुरति।

ए दासी चरणां दे विच रहे, दासियाँ नू चरणां विच लगा सुरति।।

इस भजन द्वारा सजनों सच्चेपातशाह जी कलुकाल में उलझे हुए मानवों को सरल व स्पष्ट शब्दों में सन्देश देते हुए कह रहे हैं कि अब आप सब सम्भल जाओ। यहाँ याद रखो कि इस भजन के भावार्थों को समझकर ही आप सम्भल सकते हो और यदि ऐसा न किया यानि एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दिया तो फिर सम्भलना नामुमकिन हो जाएगा। इसके विपरीत अगर इस भजन के भावार्थों को समझकर उसे धार लिया और सच्चेपातशाह जी का जीवन उद्धारक सन्देश जो इस भजन में है, उसका बीजारोपण मन में कर लिया तो आपकी क्रियायें तद्नुसार वैसी ही हो जायेंगी जैसी कि इस भजन में वर्णित हैं। अतः अपनी सुरत/ख़्याल को जो कि संसार में भटका व अटका पड़ा है और मन-मस्तिष्क में परेशानियों का जिसने अम्बार लगा रखा है, उसकी वर्तमान हालत देखकर हमें सीख लेनी है यानि इस बात को समझना है कि हमारे मन में जिस प्रकार के ज्ञान का ज्ञानेन्द्रियों द्वारा बीजारोपण होता है, उस ज्ञान अनुसार ही बीज हमारे मन में प्रस्फुटित होकर फलता-फूलता है और फिर वैसे ही फल कर्मों के रूप में प्रदान करता है। अतः सजनों मानो कि मन का धरातल बहुत अधिक उपजाऊ है। इसमें जो बीजो, उसका वैसा ही प्रभाव अन्दर फलित होता है। इसीलिये सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि अगर अच्छा फल लेना चाहते हो तो अच्छा बीजो क्योंकि जैसा बीजा है, वैसा ही प्राप्त होना है। अगर किसी प्रकार भी कटु भाव बीज दिया या कोई कामुक भाव बीज दिया तो वैसी ही क्रियायें अन्दर आरम्भ हो जायेंगी और हमें मानसिक रूप से परेशानियों या अप्रसन्नता के भाव का अनुभव होने लगेगा। सजनों यहाँ आप मानोगे कि अगर हम परेशानियाँ खरीदते हैं तो मानसिक रूप से रोगी बनना निश्चित है। मानसिक रूप से रोगी हुए तो शारीरिक रूप से व व्यावहारिक रूप से भी रोगी ही कहलायेंगे और तब तो रोना-झुखना चलता ही रहेगा।

इस सन्दर्भ में सजनों जो भी धारो उसे बड़ी सावधानी से धारण करने की आवश्यकता है। धार कर अगर उसे नाम-अक्षर के जाप से सींचोगे तो अमृत का प्याला बन जाएगा, इसके विपरीत अगर निन्दा-उस्तत के भाव से सींचोगे तो विष का प्याला बन जाएगा। विष का प्याला जो भी पीता है वह निश्चित रूप से मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि आप सब भी इस बात को मानते हो तो तुरन्त होश में आ जाओ। जो भी सजन होश में आकर अमृत के प्याले का सेवन करेगा, वह निःसन्देह अमरत्व को प्राप्त हो अमर नाम कहलायेगा। सजनों

मात्र इतनी सी सावधानी आपको भू-लोक से उठाकर गगनमण्डल से भी ऊपर ले जा सकती है और आपको अपने उस निश्चित स्थान पर विराजमान कर सकती है, जहाँ आप प्रकाश नाल प्रकाश हो जाओगे। इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि प्रकाशित होने के उपरान्त कोई भी शरीर धारने की आवश्यकता नहीं रह जाती। इसलिए इस बात को समझो कि मन बहुत अधिक उपजाऊ धरा रूप है। इस धरातल में जो भी बीजते हैं और उसे जिस प्रकार से सींचते हैं वैसा ही अंकुरण हो पौधा/पेड़ बन जाता है और तद्नुरूप उस पर फल लगते हैं। वही फिर व्यवहार में असर छोड़ते हैं। अब जो सेवन किया वैसा ही हमारे अन्तर्घट में चलेगा। इसलिये अन्तर्घट को पवित्रता में साधे रखने हेतु हमें बाह्य रूप से सावधान रहने की अत्यन्त आवश्यकता है। यह सब सावधानियाँ सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में पूर्णतया विदित हैं। अब ज्ञान पास होते हुए भी यदि हम अपनी रक्षा करने में निर्बल रहते हुए अमरता के स्थान पर जन्म-मरण के चक्र-व्यूह में उलझ जाते हैं तो यह अपने प्रति बहुत बड़ा

धोखा/अन्याय है। अतः अपने प्रति न्यायकारी बनो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में अपनी सुरत को समर्पित कर दो। इस विषय में मनमत मत लगाओ और गुरुमत अनुसार अपने मन-वचन-कर्म को साध लो। ऐसा करने से आपका ख़्याल-ध्यान दोनों ही प्रकाश में स्थित हो जायेंगे। तदुपरान्त हमारा मन, मन्दिर बन जायेगा।

इस सन्दर्भ में सजनों जानो व मानो कि अगर हमारा ख़्याल भटकता रहे कि मैं अमुक मन्दिर में, मस्जिद या गुरुद्वारे में जाऊँ, तो यह एक फुरना है। कुदरत ने हमें अपने यथार्थ में हर पल साधे रहने की योग्यता प्रदान की हुई है। इतना होते हुए भी हमें मन्दिर/मस्जिद या कोई अन्य गुरु साधे तो यह एक बहुत बड़ी अज्ञानता है। ऐसा तो तब हो जब हमने स्वयं को जाना व पहचाना नहीं। इसलिए तो इस अवस्था में कोई दूसरा जो भी हमें जनाता है, वह हमें निश्चित रूप से अपने अधीन कर लेता है और हमारी स्वतन्त्रता का हनन हो जाता है। ऐसा न हो इसलिए आप सबसे अनुरोध करते हैं कि अपने साथ ऐसा मत होने देना। इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हे सुरति ! अपनी उन्नति के प्रभाव व सत्यज्ञान के वर्त-वर्ताव द्वारा अन्य दासियों को भी ऐसा सुनिश्चित करने के प्रति प्रेरित करो। निश्चित रूप से आपके अन्दर जो बदलाव आएगा उससे दूसरा भी प्रभावित होगा ही होगा। यही नहीं जब सत्यज्ञान को बार-बार दूसरों को बताओगे तो वह आपकी स्मृति में ठहर जायेगा और स्मृति में ठहरी हुई बात परिणाम तो लायेगी ही लायेगी। अतः कुमतिवान से सुमतिवान बनकर आगे बढ़ो और जीवन विजयी हो जाओ। सोचों में मत डूबे रहो, सोचों

में बने रहना हार है। जैसे ही कोई युक्ति मिलती है तो तत्क्षण उस पर क्रिया करना आरम्भ करना होता है। ऐसा होने पर सब कुछ हो जाता है। चलो आगे सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

अदल बदल हो रही है दुनियां कैसे समझा रहे समझा रहे श्री कृष्णचन्द्र भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

ओ ओ ओ मुख में कैसे मुरली साजे हथ चक्र सुदर्शन आहा हथ चक्र सुदर्शन वाह वाह।

संख चक्र गदा पद्मधारी नटवर ओही जान जपो भगवान, जपो भगवान।।

सच नू धारण करके जेहड़ा सच कमावे बेखौफा, बेख़तरा, बेडर ओ हो जावे।

निर्भय, निर्वैर ओन्हु मिले त्रिलोकी दी कुर्सी।।

कैसा ओ चमक रिहा, चमके ओ सुजान, जपो भगवान, जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

सुगम रस्ता ओ धारण करके अगम अगोचर पावे।

बिन किश्तियों बिन बेड़ियों बिन जहाज़ों पार हो जावे।।

निर्भय, निर्वैर ओन्हु मिले विश्रामी पलंग।।

कैसा ओ चमक रिहा, चमके ओ महान, जपो भगवान, जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।

शक्ति नू धारण करके जेहड़ा शक्ति नू चमकावे।

बिन हथियारों बिन तीरों बिन तलवारों जय ओ पावे।।

निर्भय, निर्वैर ओन्हु मिले अनमोल सिंहासन।

हीरे रत्न जड़त ताज ओहदा जान, जपो भगवान, जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

निष्काम नूं धारण करके जेहड़ा निष्काम हो जावे।

बिन औखियाईयों, बिन खेचलों, बिन तकलीफ़ों पार हो जावे।।

निर्भय, निर्वैर ओ ऐसे पद नू पावे।

ओ चमक रिहा, चमके कुल जहान, जपो भगवान, जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

निर्वाण पद नू पाय के जोती नाल जोत हो जावे।

बिन फुरनियों बिन सूरजों सर्व प्रकाश हो जावे।।

ओ चमके सचखण्ड ब्रह्माण्ड, ओ सर्व सर्व ही जान, जपो भगवान जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

सजनों इस कीर्तन में स्पष्ट धारणीय सन्देश का वर्णन है। अतः इसका अनुकरण करना आज प्रत्येक मानव के लिये आवश्यक है क्योंकि इस कीर्तन द्वारा कुदरत सन्देश दे रही है कि हे मानव ! याद रख, जगत में बदलाव की प्रक्रिया चल रही है। कलियुग जा रहा है सतयुग आ रहा है इसलिये कलुषित भाव-स्वभावों का त्यागकर अज्ञान-धारणा को छोड़ सत्य अनुरूप धारण कर और सत्य कमाना आरम्भ कर दे। सजनों यह एक बहुत बड़ा परिवर्तन है जो हर मानव के लिये अविलम्ब अन्तर्घट में लाना अनिवार्य है। इसलिए सत्य को धारणकर सत्य को वर्त-वर्ताव में लाना आरम्भ कर दो क्योंकि सतयुग आ रहा है। याद रखो जो भी सजन ऐसा करना सुनिश्चित करेगा व इस प्रयास में सफल होगा, वह सतयुग में प्रवेश करने का सुपात्र बनेगा ही बनेगा। शेष तो सभी निश्चित रूप से विध्वंस ही समझो, उसके बाद तो फिर कर्मानुसार नम्बर आता है।

अतः आपके जीवन की प्राथमिकता शास्त्र-विहित सत्य को धारण करने की ही होनी चाहिये। याद रखो सत्य कुदरती ग्रन्थ के अतिरिक्त कहीं से भी प्राप्त नहीं हो सकता और

कुदरती ग्रन्थ चार वेद, छः शास्त्र हैं। अब इस संक्रमण काल में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ है, जो कि सबका सांझा है। अतः आप अपने भाग्य को सराहो कि आपके जीवन काल में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की उपलब्धि आपको प्राप्त हुई। अब इस ग्रन्थ द्वारा कुदरती ज्ञान प्राप्तकर अपने हृदय की सफाई करो। अन्य शब्दों में अन्तर्घट में जितना भी अज्ञानमय वातावरण पनप चुका है उसकी पूर्णतया सफाई कर उसे सत्यज्ञान से भर लो। सजनों यही एक तरीका है जिसके द्वारा आप अपना हृदय सत्यज्ञान से भर सकते हो और आपका हृदय सचखण्ड हो सकता है व अज्ञान अन्धकार छँट सकता है। तभी आप प्रकाशमय अवस्था में आ सकते हो और आपको सच और झूठ की पहचान होनी आरम्भ हो सकती है व आपकी धारणा सत्य अनुरूप हो सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा होने पर ही आपकी विवेकशक्ति प्रबल हो सकती है और आप असत्य धारणा से बच सकते हो।

इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि यह कितना बड़ा परिवर्तन है, जो सुखद व आनन्दप्रदायक है जबकि जो वर्तमान वातावरण है वह दुःखद व पीड़ादायक है। अतः अगर इस दुःख व पीड़ा से मुक्ति चाहते हो तो उपरोक्त क्रिया को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के चिन्तन-मनन द्वारा सम्पन्न करने में लग जाओ। यकीन मानो कि इस क्रिया द्वारा जो बदलाव आपके अन्दर आयेगा, उस द्वारा आपका मन, चित्त दोनों ही प्रसन्न हो उठेंगे और वह प्रसन्नता आपके चेहरों से व आपके व्यवहार से झलकेगी। वही प्रसन्नता जब आप द्वारा अन्य सजनों तक पहुँचेगी तो वह आपके साथ होते जायेंगे व आपका अनुकरण करने लग जायेंगे। तब उनके मन में भी आप जैसा बनने की चाहना उत्पन्न होगी। निश्चित रूप से तब वह सोचेंगे कि यह सजन पहले कैसा था और अब कैसा बन गया है। सजनों यह कर्म कमाकर नेकी बाँटने की बात है। अतः समय को पहचानो और जो शास्त्र कह रहा है उसको प्रवान करो तथा बदलाव का शुभारम्भ कर दो। भूलकर भी इस काम में विलम्ब मत करना, नही तो हार जाओगे। अब और अधिक प्रतीक्षा नहीं हो सकती यानि अब आप इस काम में देरी नहीं कर सकते क्योंकि समय जिस स्थान पर आकर खड़ा है उसको जानने-पहचानने व उसकी कद्र कर, यशस्वी बनने में ही समझदारी है। अब आगे ध्यानपूर्वक कीर्तन सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

कैसी हिम्मत दिखाई ओहो, कैसी कीती है चढ़ाई वाह वाह।

देखो विलम्ब ना लाई ओहो, कैसी है ओ रौशनाई वाह वाह।।

इक संग शक्ति ते इक संग लक्ष्मी विच साजन हमारा।

मिटे अन्धेरा आवे चानणा नाले होवे सवेरा।।

हटे रात उमस्या वाली सतवस्तु पाया ए फेरा।

सर्गुण विच सतवस्तु राहवे सच खंड हमारा डेरा।।

ऐसा साज मेरा हर वस्तु पीत पीताम्बर है जेहड़ा।

संख चक्र गदा पद्यमधारी यह ही तो नाम है मेरा।।

उस प्यारे दे मैं संग राहवां सतवस्तु दा साज पावे ओ जेहड़ा।

सतवस्तु दे सतवादी होवन कैसा राज है मेरा।।

सतवादी सच खंड ब्रह्माण्ड हर अन्दर स्थान है जेहड़ा।

हां मैं सर्वव्यापी युग युग रोशन नाम है मेरा।।

(हनुमान जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)

ध्वनिः-

कलुकाल हटने दा आपनूं क्या है फ़िकर।

मैं पिता हूं संग तुम्हारे, फिकर उसनू जेहड़ा पिता मुत्तूं है पुत्र।

कलुकाल हटने दा आपनूं क्या है फ़िकर।।

सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे से आप जुड़े हुए हो, इसे आप अपना सौभाग्य मानो। अपनी किस्मत को बनाने के लिये उनकी अँगुली मत छोड़ो, उसे मजबूती से पकड़ कर रखो। जिधर भी वह लेकर जायें, बिना अपनी मनमत लगाये चलते जाओ, चलते जाओ तो निश्चित ही अन्त परिणाम अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को प्राप्त कर लोगे। अगर कहीं भी मनमत लगाई तो हार जाओगे। अँगुली पकड़ने का अर्थ है कि उनके वचनों पर मानसिक पकड़ बनाओ और जो भी करते हो उसकी जाँचना-तुलना करते रहो कि जो

कुछ हो रहा है वह उनके वचनों अनुसार हो रहा है या नहीं? अगर नहीं तो अपने आप में परिवर्तन लाने के लिये बाध्य करो। सजनों जानो कि जो युग-परिवर्तन का खेल चल रहा है, उस खेल से भी स्वतन्त्र हो जाओ, मत सोचो कि क्या हो रहा है, जो चलता है उसे चलने दो क्योंकि यह कुदरत का खेल तो चलता ही रहेगा, पर आपने तो उस शक्ति को थाम रखा है जिसके द्वारा कलुकाल का विध्वंस होने जा रहा है अतः सजनों जानो कि वचन प्रवान करना अत्यन्त आवश्यक है। जीवन में दुःख आये, सुख आये, आप दोनों ही परिस्थितियों में सम अवस्था में सधे रहने के लिये यानि इन वचनों अनुसार स्थिरता से बने रहने में ही कल्याण मानो। फिर कोई भी परिस्थिति आपको परेशान नहीं करेगी, हर परिस्थिति में निरन्तर सम अवस्था में बने रहोगे। आरम्भ में थोड़ी-बहुत कठिनाई आयेगी क्योंकि कलुकाल के स्वभाव मजबूत हुए पड़े हैं, शारीरिक स्वभाव मन में डटे पड़े हैं परन्तु आप घबराना नहीं अपितु उनको उखाड़कर सार्थक बीज का रोपण करना। हम पहले भी आपको बता चुके हैं कि मन की धरा उपजाऊ है, अतः थोड़े समय में ही वह फलित हो जायेंगे और आपके हृदय में सार्थक वातावरण का निर्माण स्थापित हो जायेगा। सो सजनों अपने मन-वचन-कर्म द्वारा सत्य प्रदर्शित कर उसे प्रतिष्ठित करो क्योंकि सतवस्तु में तो सभी सतवादी होते हैं, सतवादी होते हैं तो एकता में होते हैं। एकता होती है तो कोई किसी प्रकार का तनाव नहीं होता, एक अवस्था होती है। तभी तो कहा गया हैः-

सतवस्तु दे सतवादी होवन कैसा राज है मेरा

संख चक्र गदा पद्यमधारी यह ही तो नाम है मेरा

सजनों याद रखो सत्य को धारण करके ही आपके मन में शान्ति स्थापित होगी। जब तक मन में संकल्प रहित अवस्था नहीं होती तब तक निष्काम भाव जाग्रत नहीं हो सकता और न ही आप अपनी अन्तर्निहित शक्तियों को पहचान सकते हो। अगर उनको पहचानोगे ही नहीं तो उनका प्रयोग करके अपने आप को कलियुग के प्रभाव से सुरक्षित कैसे रखोगे? आपको परमात्मा ने अपनी शक्ति प्रदान की हुई है - ब्रह्मसत्ता। उस सत्ता को धारने की युक्ति पूरी तरह से बोर्डों में लिखी हुई है। उस युक्ति को अपनाने वाले को क्या-क्या प्राप्त होता है, कैसा-कैसा मंगलकारी बदलाव उसके अन्दर आ जाता है, उसका भी विस्तृत वर्णन है। हर सप्ताह पढ़ने के उपरान्त हमारे अन्दर इच्छा जाग्रत होनी चाहिये। पर ऐसा नहीं होता क्योंकि संसार हमारे मन में इस तरह घर कर गया है कि हमारी हिम्मत टूट चुकी है। हम बन्धनमान हो गये हैं और इस बन्धन को अगर तोड़ना चाहते हो तो शास्त्र कहता

है 'भज लौ राम बलधार'। उसका विधि-विधान तो आपके पास है ही, उसका प्रयोग करो। इस तरह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा जो भी ज्ञान आपको प्राप्त हो रहा है, उसे प्रयोगात्मक रूप से धारण कर हर प्रकार से स्वस्थ हो जाओ। यह स्वस्थता आपको पुनः आत्म-स्मृति में ले आयेगी और काम बन जायेगा क्योंकि तब आपको यह ज्ञात हो जाएगा कि मैं कौन हूँ, यहाँ क्या करने आया हूँ, मुझे यहाँ किसने और क्यों भेजा है? फिर आप उसी में ही संलग्न हो जाओगे। चलो अब कर लेना।

अब जैसा कि सबको पता ही है कि सात सितम्बर को विश्व समभाव दिवस मनाया जाता है। तो समभाव क्या है, उसे कैसे अपनाना है और समभाव किस प्रकार के भक्ति-भाव का सूचक है, उस भक्तिभाव पर स्थिरता से बने रहना और बने रहने हेतु बाल-अवस्था के भक्तिभाव छोड़ने का जो निर्देश है, इसके बारे में आपको उस दिन विस्तृत रूप में सब कुछ बताया व समझाया जायेगा। आज के समय में बाल-अवस्था के जो अनेकानेक भक्तिभाव प्रचलित हैं, उनके विषय में भी सचेत किया जायेगा कि उनमें कदापि नहीं उलझना और न ही किसी के चँगुल में फँसना है अपितु आज़ाद युवा-अवस्था के भक्तिभाव में बने रहना है। अतः उस दिन सात सितम्बर को जितने भी यहाँ बैठे हो, उन्होंने तो आना ही आना है और जो भी आपके सम्पर्क में हैं उनको अपने साथ लाने का भरकस प्रयास करना है ताकि उनको भी युग-परिवर्तन के इस खेल की समझ आ जाये। यह परोपकार सबने कमाना है। उस दिन शनिवार है इसलिए कोई कठिनाई भी नहीं होगी अतः सभी ने दस बजे तक अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेना है। गैर-हाज़िर रहकर अपना नुक्सान मत कर लेना क्योंकि नहीं आये तो किसी दिन फिर रोते हुए आना पड़ेगा। अतः रोने का दिन न आये वैसा सुनिश्चित करने के लिये, समभाव समदृष्टि क्या है, उसको यहाँ आकर समझ लेना। युवा-अवस्था का भक्तिभाव अपनाने के लिये सुचेत होकर बाल-अवस्था के भक्तिभाव कदापि किसी के भी वश में आकर नहीं अपनाना, अन्यथा हानि में रहोगे। याद रखो कि चेतावनी के पश्चात भी अपनी हानि स्वयं करना सदा ही दर्दनाक होता है क्योंकि बाद में पछताने से कुछ नहीं होता, जब चिड़ियाँ खेत चुग जाती है। तो अभी से अपना-अपना, अपने संगी-साथियों का प्रबन्ध कर लेना। सजनों आपको याद रखना है कि यह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का द्वारा है तथा यह सबका साँझा है।

इसमे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सबका समरसता से स्वागत है अतः आप किसी को भी अपने साथ ला सकते हो, कोई पाबन्दी नहीं है। आपको पुरुषार्थ करना ही करना है जैसा कि युवा बच्चे कर रहे हैं। आप भी निष्काम भाव से सेवारत होने के प्रति जागृति में आकर

होश सम्भालो। इस सन्दर्भ में अब आपको यह भी बता दें कि जो दो अक्टूबर का कार्यक्रम है उसमें इतने अधिक विश्व विद्यालय भाग लेने को प्रस्तुत हो गये हैं कि हम तो हैरान हो रहे हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु कई स्कूलों, कॉलेजों के असंख्य बालक बालिकायें भी तत्पर हैं क्योंकि यह बदलाव की क्रिया जो आरम्भ हुई है, उनको बहुत ही अधिक अच्छी लग रही है। इस सन्दर्भ में आपको अपने बच्चों को तैयार करने में किस प्रकार की कठिनाई या दिक्कत है? आप तो इस युक्ति को चरितार्थ करने पर तुले हुए हो कि घर के वैद्य से ईलाज कराना उचित नहीं होता। अपने बच्चों को, मित्रों को इस सुख से वंचित क्यों रखना चाहते हो? यह नादानी मत करो। इसमें युवा, प्रौढ़ सभी भाग ले सकते हैं और ले भी रहे हैं। अब सात तारीख को दस बजे तक सभी ने अपने साथ अपने परिवारजनों व मित्रों को लेकर आना है ताकि आप देख सको कि जो बदलाव का सन्देश जन-जन तक पहुँचाने में आप सकुचाते हो व डरते हो, वह आप सबको यहाँ से प्राप्त हो जायेगा। यह आपका काम है जिसको करने में आप अपने आप को असक्षम समझते हो, वह यहाँ से होने जा रहा है। अतः इस मौके का पूरा-पूरा लाभ उठाना।

आप अपने लक्ष्य में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।